Sarva Karya Siddhi Saundarya Lahri Mantra Prayoga

समस्त कार्यों की सिद्धि हेतु सौन्दर्यलहरी के कुछ विशिष्ट प्रयोग

Sumit Girdharwal

9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.net
www.yogeshwaranand.org

आदिगुरू भगवत्पाद शंकराचार्य ने सौन्दर्य लहरी नामक ग्रन्थ में मां त्रिपुरसुन्दरी के स्वरूप का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। उनके अनिवर्चनीय स्वरूप का वर्णन करने के लिए ही उन्होंने सौन्दर्य लहरी ग्रन्थ की रचना की जिसमें उन्होंने बहुत ही सुन्दर ढंग से मां की स्तुति की है। वास्तव में इसके दो खण्ड हैं..... आनन्द लहरी और सौन्दर्य लहरी। इन दोनों को एकत्र करके ही सौन्दर्य लहरी का नाम दिया गया है। इसमें प्रस्तुत स्तुति बहुत ही प्रभावी और रहस्यों से परिपूर्ण है। इससे कई साधनांए एवं ऐसे

प्रयोग सिद्ध होते हैं, जो मानव जीवन के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हैं।

वास्तव में शिव और शक्ति अथवा शिवा में कोई भेद नहीं है। शिवा ब्रह्म की शक्ति है। यदि शिवा अथवा शक्ति की आराधना की जाती है तो वह ब्रह्म की ही आराधना है, क्योंकि शिवा का आस्तित्व शक्तिमान से अलग नहीं । इस सम्पूर्ण सृष्टि में जो भी पुल्लिंग रूप है, वह शिव है और जो भी स्त्रीलिंग है, वह शक्ति रूप है। इनमें मात्र लिंगभेद का ही भेद है, इसके अतिरिक्त कोई और भेद नहीं है।

भगवती त्रिपुर सुन्दरी की इस स्तुति से साधकों को अत्यन्त ही सुख, शान्ति एवं परम ज्ञान की प्राप्ति होती है। उस परम शक्ति के प्रकाश से सम्पूर्ण जगत प्रकाशमान है। यन्त्र, मन्त्र एवं तन्त्र के माध्यम से हम उनकी उपासना बाह्य रूप में करते हैं।

यंहा भी मैं कुछ ऐसे प्रयोग दे रहा हूँ, जिनमें मन्त्र एवं यन्त्र का प्रयोग किया गया है। इन दोनों के माध्यम से हम अपने जीवन की बहुत सी समस्याओं का समाधान भगवती की कृपा से कर सकते हैं। यन्त्रों की उत्पत्ति भगवान शिव के ताण्डव नृत्य से मानी जाती है। मन्त्रों के साथ यन्त्रों का प्रयोग आदि काल से होता रहा है। अतः साधक दोनों का प्रयोग करें।

नोट - केवल श्री विद्या में दीक्षित साधक ही यह प्रयोग करें अथवा सर्वप्रथम अपने गुरूदेव से श्री विद्या की दीक्षा प्राप्त करें।

समस्त कार्यों की सिद्धि हेतु प्रयोग

सर्वप्रथम संकल्प लेकर भगवती का पंचोपचार पूजन करें। पूजन बाह्य रूप से भी किया जा सकता है और मानसिक रूप से भी। मानसिक रूप में पूजन करते समय पृथ्वी को गंध, आकाश को पुष्प, वायु को धूप, अग्नि को दीप और जल को नैवेद्य के रूप में माना जाता है।

मानसिक रूप से पूजन करने हेतु निम्नवत् उच्चारण करें।

लं पृथिव्यात्मने गन्धं परिकल्पयामि नमः।

हं आकाशात्मने पुष्पं परिकल्पयामि नमः।

यं वाय्वात्मने धूपं परिकल्पयामि नमः।

रं वन्ह्यात्मने दीपं परिकल्पयामि नमः।

वं जलात्मने नैवेद्यं परिकल्पयामि नमः।

इसके उपरान्त ध्यान करें, यथा-

चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारू-चन्दन-चर्चितां।

शुक्लवर्णां त्रिनयनां वरदां च शुचिस्मितां।।

रत्नालंकार भूषाढ्यां श्वेतमाल्योपशोभितां।

देव-वृन्दैरभि-वन्द्यां सेवितां मोक्षकांक्षिभिः।।

शकारं परमेशानि श्रृणु वर्णे शुचिस्मिते।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

रक्तवर्णं प्रभाकारं स्वयं परम-कुण्डली।।

चतुर्वर्गप्रदं देवि शकारं ब्रह्म-विग्रहं।

पंचदेवमयं वर्णें पंचप्राणात्मकं प्रिये।।

रत्न-पंचतमोद्युक्तं त्रिकूट सहितं सदा।

त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादित्व-संयुतं।।

इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुंकुमच्छविः।

हरिब्रह्ममयं वर्णें सदाशिवमयं प्रिये।।

महाशक्तिमयं देवि गुरूब्रह्ममयं तथा।

शिवत्रयमयं वर्णं परब्रह्म -समन्वितं।।

ऊर्ध्वाधः कृब्जितामध्ये रेखा तत्संगता भवेत्।

लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात्तास्वेव संवसेत् ।।

धूम्रवर्णां महारौद्री पीताम्बरयुतां पराम्।

कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साह-विवर्धिनीं ।।

चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दन-भूषिताम्।

एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपां तु दशधा जपेत्।।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

इस प्रकार ध्यान करने के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का जप करें-

मन्त्र

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं ।

न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि ।।

अतस्त्वामाराध्यां हरिहर-विरंच्यादिभिरपि ।

प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति।।

अर्थात् हे शिव ! तू सदैव शक्तियुक्त ही है। यदि तू शक्ति से रहित होता तो 'इ'कार रहित शिव अर्थात् शव के समान होता। फिर विश्व की क्रिया का स्पन्दन कैसे और कंहा होता। विश्व दृश्य दर्शनाधारा शुद्ध चैतन्य प्रस्फुरिता दिव्य शक्ति ही है। अतः वह परअपरा महामाया कामकूट सिद्धिदा पूर्णकामा कामस्वरूपा हरिहर-विरंचिवरदा समस्त देववृन्द द्वारा वन्दिता ही इस जगत में आराधना करने येाग्य है। उत्पत्ति, स्थिति, संहारात्मिका महाशक्ति परा हे अनन्तशक्ति! तेरे अनन्त गुणों का गान करने एवं तेरे अमोघ चरणों की वन्दना करने का सौभाग्य किसी पापी को किस प्रकार हो सकता है।

विधि :- उपरोक्त मन्त्र का जप एक हजार की संख्या में अपने मूलाधार में ध्यान लगाते हुए करें। तदोपरान्त एक माला से होम

करें । होम में लाल पुष्प, तिल, जौं और सूखी बेल पत्थर तथा शुद्ध घी का प्रयोग करें।

इसके बाद दस मन्त्रों से मार्जन तथा दस मन्त्रों से तर्पण करें।

पूजन यन्त्र नीचे दिया गया है। इस यन्त्र को पूजन हेतु अपने पूजा गृह में रखें। इस यन्त्र को प्रतिदिन एक हजार की संख्या में बारह दिनों तक बनाना है। इसे सोने के पत्तर पर केसर की स्याही से अनार की कलम से लिखा जाता है। इस क्रिया के प्रभाव से साधक प्रत्येक कार्य सिद्ध कर सकता है।

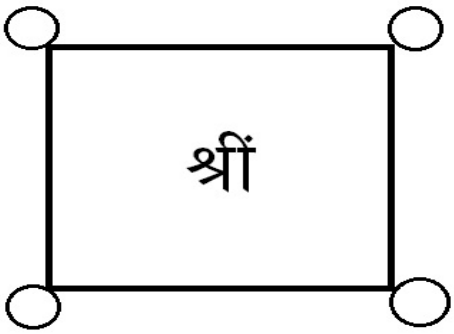

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

Books written by Shri Yogeshwaranand Ji

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

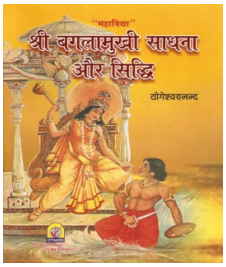

2. **Mantra Sadhana**

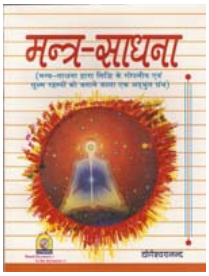

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya is the upcoming book of Shri Yogeshwaranand Ji on Ma Baglamukhi. Only limited copies of this book are going to be published. If you want to secure your copy before all sold out please make a payment of Rs 680 into the below A/C
Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094
After payment send your complete address and payment receipt to shaktisadhna@yahoo.com & sumitgirdharwal@yahoo.com. For more details please call on +91-9540674788, 91-9410030994

Feedback & Support

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content provided by Shri Yogeshwaranand Ji regarding das mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. I can't do it alone. I request all of you to help me achieve this goal.

Requirement

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Preferable font chanakya) or Microsoft Office (Font Used Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

My dear readers! Very soon We are going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at sumitgirdharwal@yahoo.com Thanks

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org